प्रातः क्लास 28/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। बाप ने बच्चों को समझाया है कि यह पाठशाला है, यह पढ़ाई है ना। इस पढ़ाई से यह पद प्राप्त होता है। इनको स्कूल वा युनिवर्सिटी समझना चाहिए। यहाँ दूर2 से पढ़ने लिए आते हैं। क्या पढ़ने आते हैं। यह एमआबजेक्ट बुद्धि में है। हम पढ़ाई पढ़ने लिए आते हैं। पढ़ाने वाले को कहा जाता है भगवानुवाच। यह है गीता। दूसरा कोई बात नहीं है। गीता पढ़ाने वाले का पुस्तक है; परन्तु पुस्तक कोई पढ़ते नहीं हैं, गीता कोई हाथ में नहीं है। यहाँ कोई भी साधु, सन्त, महात्मा, विद्वान आदि नहीं पढ़ाते हैं। यह भी कहते हैं मैं बहुत शास्त्र आदि पढ़ा हुआ हूँ। तुमको मैं नहीं पढ़ाता हूँ। यह तो भगवानुवाच है। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता। भगवान ऊँच ते ऊँच एक है। यह तो भी सारी युनिवर्सिटी है, मूलवतन, सूक्ष्मवतन में नहीं चल(ती) है। यहाँ ही चलता है। 84 का चक्र भी यहाँ ही है। इनको ही कहा जाता 84 का चक्र का नाटक। यह बना बनाया खेल है। यह बड़ी समझने की बातें हैं; क्योंकि ऊँच ते ऊँच भगवान उनकी तुमको मत मिलती है। दूसरी तो कोई वस्तु है नहीं। एक को ही कहा जाता है सर्वशक्तिवान। वर्ल्ड आलमाइटी अथार्टी। अथार्टी का अर्थ भी खुद समझाते हैं। यह मनुष्य नहीं समझते; क्योंकि वह सभी है तमोप्रधान दुनिया। उनको ही कहा जाता है कलि(युग)। ऐसे नहीं कि कोई के लिए कलियुग है, कोई के लिए सतयुग है, कोई के लिए त्रेता है, कोई के लिए द्वापर है। जब कि अभी है नर्क। तो कोई भी मनुष्य ऐसे कह नहीं सकता कि हमारे लिए स्वर्ग है; क्योंकि हमारे पास धन है तो हमारे लिए स्वर्ग है। यह हो नहीं सकता। यह तो बना बनाया खेल है। सतयुग पास्ट हो गया है। इस समय तो हो भी नहीं सकता। यह सभी समझ की बात है। बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। सतुयग में इनका राज्य था। भारत उस समय सतयुगी कहलाता था। अभी जरूर कलियुग कहलावेगा। सतयुग में थे तो उस.. स्वर्ग कहा जाता था। ऐसे नहीं कि नर्क को ही स्वर्ग कहेंगे। मनुष्यों की तो अपनी2 मत है। धन का सुख है .... अपन को स्वर्ग में समझते हैं। मेरे पास तो बहुत सम्पत्ति है इसलिए मैं स्वर्ग में हूँ; परन्तु विवेक कहता है (कि) नहीं। यह तो है ही नर्क। भल किसके पास 10/20 हजार, लाख दो हों; परन्तु यह है ही रोगी दुनिया। सतयुग .... कहेंगे निरोगी दुनिया। दुनिया यही है। सतयुग में इनको निरोगी दुनिया, कलियुग में भोगी दुनिया कहा जाता। वहाँ है ही योगी दुनिया; क्योंकि विकार का भोग विलास नहीं होता। तो यह स्कूल है। इसमें शक्ति की ब(ात) नहीं। टीचर शक्ति दिखलाते हैं क्या। एमआबजेक्ट रहता है हम फलाना बनेंगे। तुम इस पढ़ाई से मनुष्य से देवता .... हो। ऐसे नहीं कि कोई जादू वा छू मंत्र वा रिद्धी सिद्धी की बात है। यह तो स्कूल है। स्कूल में रिद्धी सिद्धी (की) बात होती है क्या। पढ़कर कोई डाक्टर, कोई बैरीस्टर बनता है। यह ल0ना0 भी मनुष्य थे; परन्तु पवित्र थे। इ(स)लिए इन्हों को देवी देवता कहा जाता है। पवित्र जरूर बनना है। यह है ही पतित पुरानी दुनिया। मनुष्य तो समझते हैं पुरानी दुनिया होने में लाखों वर्ष पड़े हैं। कलियुग के बाद ही सतयुग आवेगा। अभी तुम हो (संगम)युग पर। इस संगम का भी किसको पता नहीं है। समझते भी हैं सतयुग होता है, कलियुग होता है; परन्तु सत(युग)लाखों वर्ष दे देते हैं। यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं। उनको कहा जाता है सुप्रीम सोल। आत्माओं ..... को बाबा ही कहेंगे। दूसरा कोई का नाम नहीं होता। बाबा का नाम है शिव। शिव के मंदिर में भी जाते हैं। शिव को निराकार ही कहा जाता। उनका मनुष्य शरीर है नहीं। तुम आत्माएँ यहाँ पार्ट बजाने आते हो। त... तुमको मनुष्य शरीर मिलता है। वह शिव है तुम हो सालीग्राम। शिव और शालीग्राम की पूजा भी होनी ... क्योंकि चैतन्य होकर गये हैं। कुछ करके गये हैं तब उनका नामाचार गाया जाता है अथवा पूजे जाते हैं। आगे जन्म का तो किसको पता नहीं है। इस जन्म में गायन करते हैं। देवी देवताओं को पूजते हैं। इस जन्म में तो बहुत लीडर्स भी बन गये हैं। जो अच्छे2 साधु सन्त आदि होकर गये हैं उनकी स्टैम्पस भी बनाते हैं। नामाचार के लिए स्टैम्पस बनाते हैं। यहाँ ही होकर गये हैं। उनका नाम गाते हैं। फिर सभी से बड़ा नाम किसका गाया जाये। सबसे बड़े ते बड़ा कौन है? ऊँच ते ऊँच एक भगवान ही है। वह है निराकार। उनकी महिमा बिल्कुल

अलग है। देवताओं की अलग है। मनुष्य को देवता नहीं कह सकते। देवताओं को फिर मनुष्य नहीं कहा जा सकता। देवताओं में गुण थे। यह(ल0ना0) हो गये हैं ना। पवित्र थे। विश्व के मालिक थे। इन्हों की पूजा भी करते हैं; क्योंकि पवित्र, पूज्य हैं। अपवित्र को पूज्य नहीं कहेंगे। अपवित्र सदैव पवित्रों को पूजते हैं। कन्या पवित्र है तो पूजी जाती है। पतित बनती है तो सभी को पांव परना पड़ता है। इस समय सभी हैं पतित। सतयुग में सभी पावन थे। वह है ही पवित्र दुनिया। कलियुग है पतित दुनिया। तब ही उनको बुलाते हैं। जब पवित्र हैं तो पतित पावन को नहीं बुलाते हैं। बाप खुद कहते हैं मुझे सुख में कोई भी याद नहीं करते हैं। भारत की ही बात है ना। इस समय पतित बना है। भारत ही पावन था। पावन देवताओं को देखना है तो जाकर मंदिरों में देखो। देवताएँ सभी हैं पावन। उनमें जो मुख्य2 हैड्स हैं उन्हों को मंदिरों में दिखाते हैं। इन ल0ना0 के राज्य में सभी पवित्र थे। यथा राजा रानी..... इस समय यथा राजा रानी पतित तथा प्रजा। सभी पुकारते रहते हैं हे पतित पावन आओ। कृष्ण को तो सन्यासी लोग मानते ही नहीं। सन्यासी कृष्ण को कब भगवान वा ब्रह्म नहीं कहेंगे। वह तो समझते हैं भगवान निराकार है। उनका चित्र भी निराकार नमूने पूजा जाता है। उनका एक्युरेट नाम शिव है। तुम आत्माएँ जब यहाँ आकर शरीर धारण करते हो तब तुम्हारा नाम रखा जाता है। आत्मा तो आत्मा ही है। आत्मा को बता कैसे सकेंगे। इसलिए शरीर पर नाम रखा जाता है। आत्मा अविनाशी है। यह जीव(शरीर) विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेती है। 84 जन्म तो चाहिए ना। 84 लाख नहीं होती। तो बाप समझाते हैं यह दुनिया सतयुग में नई दुनिया थी। राइटियस थे। यही फिर अनराइटियस हो जाती हैं। वह है सच खण्ड। सभी सच बोलने वाले होते हैं। भारत को सच खण्ड कहा जाता है। झूठ खण्ड भी कहा जाता है। झूठ खण्ड से फिर सच खण्ड बनना है। सच्चा बाप ही आकर सच खण्ड स्थापन करते हैं। उनको सच पातशाह सत्य कहा जाता है। यह है ही झूठ खण्ड। मनुष्य जो बोलते हैं वह बिल्कुल झूठ। पूज्य परमपिता परमात्मा कहाँ है। कह देंगे वह तो सर्वव्यापी है। बाप कहते हैं यह सभी है नानसेन्स बुद्धि। सेन्सीबुल बुद्धि हैं यह देवताएँ। जो होकर गये हैं उन्हों को नानसेन्सीबुल मनुष्य पूजते हैं अर्थात् अकलमन्द और बेवकूफ हैं। अकलमन्द कौन बनाते हैं। फिर बेवकूफ कौन बनाते हैं। यह भी बाप बैठ बताते हैं। अकलमन्द सर्वगुण सम्पन्न.....बनाने वाला है बाप। वह खुद आकर अपना परिचय देते हैं। जैसे तुम आत्मा हो, फिर यहाँ शरीर में प्रवेश कर पार्ट बजाते हो। मैं ... एक ही बार इनमें प्रवेश करता हूँ। तुम बच्चे समझते हो वह है ही एक। उनको ही सर्वशक्तिवान कहा जाता है। दूसरा कोई मनुष्य नहीं जिसको सर्वशक्तिवान कहें। ल0ना0 को भी नहीं कह सकते; क्योंकि उन्हों को भी शक्ति देने वाला कोई है। पतित मनुष्य में शक्ति हो न सके। आत्मा में जो शक्ति रहती है वह आस्ते2 फिर डिग्रेड हो जाती है। अर्थात् आत्मा जो सतोप्रधान शक्तिवान थी वह तमोप्रधान शक्ति हो जाती है। जैसे मोटर का तेल खलास होने से मोटर खड़ी हो जाती है। यह बैटरी घड़ी2 नहीं खपती हैं। इनको पूरा टाइम मिला हुआ है। कलियुग अन्त में बैटरी ठण्डी हो जाती है। जो पहले सतोप्रधान विश्व के मालिक थे वह तमोप्रधान बन जाने कारण ताकत कम हो जाती है। शक्ति रहती ही नहीं। वर्थ नॉट ए पैनी हो जाते हैं। भारत में देवी देवता धर्म था तो वर्थ पाउन्ड थे। रीलिजन इज माइट कहा जाता है ना। आदि सनातन देवी देवता धर्म में ताकत है। विश्व के मालिक थे। क्या ताकत था। कोई लड़ने आदि की ताकत नहीं थी। ताकत मिलती है सर्वशक्तिवान बाप से। ताकत क्या चीज़ है बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी। अभी तमोप्रधान है। जन्म लेते2 अभी तमोप्रधान होते गये हो। अभी तो ताकत है विश्व के मालिक बदली विश्व के गुलाम बन गये हो। बाप समझाते हैं यह 5 विकार रूपी रावण तुम्हारी ताकत छीन लेती है। इसलिए भारतवासी कंगाल बन पड़े हैं। ऐसे नहीं समझो सन्यासी आदि में बहुत ताकत है। वह ताकत नहीं है। यह रूहानी ताकत है जो सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाने से मिलती है। साइंस और सायलेन्स की इस समय जैसे कि लड़ाई है। तुम सायलेन्स में जाते हो। उसका तुमको बल मिल रहा है। सायलेन्स का बल लेकर सायलेन्स दुनिया में चले जावेंगे। बाप को याद कर अपन को

शरीर से डिटेच कर देते हैं। भक्तिमार्ग में भगवान पास जाने लिए तुमने बहुत ही माथा मारा है; परन्तु सर्वव्यापी पत्थर भित्तर में कह दिया है। तो कोई रास्ता मिलता ही नहीं। तुम तमोप्रधान बन गये हो। यह तो पढ़ाई है। पढ़ाई को शक्ति नहीं कहेंगे। बाप कहते हैं पहले तो पवित्र बनो और सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है उनकी नालेज समझो। नालेजफुल तो बाप ही है। इसमें शक्ति की बात ही नहीं। नालेज ज्ञान को कहा जाता है। बच्चों को यह पता नहीं है कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। तुम एक्टर्स पार्टधारी हो ना। यह बेहद का ड्रामा है। आगे मनुष्यों का नाटक चलता था इसमें अदली बदली हो सकते थे। अभी तो फिर वायसकोप बनी है। बाप को भी वायसकोप का मिसाल दे समझाना सहज होता है। वह छोटा वायसकोप यह है बड़ा। नाटक में एक्टर्स आदि को चेंज कर सकते हैं। यह तो अनादि ड्रामा है। एक बार जो शूट हुआ वह फिर बदल नहीं सकता। बीमारी सिमारी आदि जो कुछ है सभी रिपीट होगा। यह सारी दुनिया बेहद का वायसकोप है। शक्ति की तो बात ही नहीं। अम्बा को शक्ति कहते हैं; परन्तु फिर भी नाम तो है ना। उनको अम्बा क्यों कहते हैं, क्या करके गई है। अभी तुम समझते हो लक्ष्मी को सतयुग में समझते हैं। अम्बा कब होकर गई है यह किसको भी पता नहीं है नालेज ही नहीं। इसलिए कहा जाता है अन्धश्रद्धा की पुजारी। जिसकी पूजा करते हैं उनकी आक्युपेशन को जानना चाहिए ना। कितना ब्लाइडफेथ है। आज लक्ष्मी को पूजेंगे कल अम्बा को पूजेंगे। परसों काली को। चण्डीका देवी का भी मेला लगता है। अभी तुम समझते हो ऊँच ते ऊँच है अम्बा और लक्ष्मी। अम्बा ही फिर लक्ष्मी बनी है। यह भी तुम अभी समझते हो। तुम नालेजफुल भी बनते हो। और तुमको पवित्रता भी सिखलाते हैं। वह पवित्रता आधा कल्प चलती है। फिर बाप ही आकर पवित्रता का रास्ता बताते हैं। उनको बुलाते भी हैं इसलिए कि आकर रास्ता बताओ और गाइड भी बनो। वह है परमपिता। परमआत्मा। सुप्रीम सोल। सुप्रीम के पढ़ाने से आत्मा सुप्रीम बनती है। सुप्रीम प्योर को कहा जाता है। अभी तुम पतित हो। बाप तो एवर पावन है ना। फर्क है ना। वह एवर पावन ही .... आये तब सभी को वरसा दे और सिखलावे। इसमें खुद आकर बतलाते हैं कि मैं तुम्हारा बाप हूँ। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। नहीं तो आत्मा बदले कैसे। रथ भी मशहूर है। गाते हैं भाग्यशाली रथ। तो भाग्यशाली रथ है मनुष्य का। न कि कोई घोड़ेगाड़ी की बात है। मनुष्य का ही रथ चाहिए जो मनुष्यों को बैठ समझावे। उन्होंने फिर घोड़ेगाड़ी बैठ दिखाई है। भाग्यशाली मनुष्य को कहा जाता है। यहाँ कोई2 जानवरों की भी बहुत अच्छी सेवा होती है। जो मनुष्य की भी नहीं होती। कुत्ते को कितना प्यार करते हैं। घोड़े को, गाय को भी प्यार करते हैं। कुत्तों को इन्जेक्शन लगते हैं सबसे जास्ती प्यारा कुत्ता कौन सा है। कुत्ते को चूमते भी हैं। बड़ी खुशी होती है। यह सभी छी छी काम सतयुग में नहीं होते। ल0ना0 कुत्ते पालते होंगे क्या? इसलिए कहा जाता है यहाँ तो मनुष्य जानवरों से भी बदतर है। कहाँ पति को चूमना कहाँ कुत्ते को। तमोप्रधान बुद्धि है ना। इसलिए सतोप्रधान बनाने वाले बाप को बुलाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सभी तमोप्रधान बुद्धि थे। अभी सतोप्रधान बन ऐसा बनना है। वहाँ तो घोड़े आदि ऐसे नहीं होते जो मनुष्य ऐसे इनकी सेवा करे। तो बाप बैठ समझाते हैं तुम्हारा हालत देखो क्या हो गई है। रावण ने यह हालत कर दी है। यह तुम्हारा दुश्मन है; परन्तु तुमको पता नहीं है कि इस दुश्मन का जन्म कब होता है। शिव के जन्म का भी पता नहीं है। तो रावण के जन्म का भी पता नहीं है बाप बतलाते हैं त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में रावण आते हैं। उनको दस सीस क्यों दिये हैं। हर वर्ष क्यों जलाते हैं यह भी कोई नहीं जानते। अभी तुम मनुष्य से देवता बनने लिए पढ़ते हो। जो पढ़ते नहीं वह देवता बन नहीं सकते। फिर वह आवेंगे तब जब रावण राज्य शुरू होगा। बुलाते भी हैं हे पतित पावन आकर हमको पावन बनाओ। पतित पावन दुनिया में आ न सके। अभी तुम जानते हो हम ही देवी देवता धर्म के थे। फिर सैंपलिंग लग रही है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आकर तुमको पढ़ाता हूँ। इस समय सारी सृष्टि का झाड़ पुराना हो गया है। नया जब था तो एक ही धर्म था। फिर दो कला डिग्रेड होते हैं। पुनर्जन्म होता है ना। बाप 84 का भी हिसाब बताते हैं। तुम नहीं जानते हो। बाप नालेजफुल है। बच्चों को गुडमॉर्निंग।